सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल

९वीं एवेन्यू, आई.पी.एक्सटेंशन, पटपडगंज,दिल्ली – ११००९२

सत्र:2026-27

कक्षा:7	विषय: हिंदी पाठ्यपुस्तक	पाठ: ८ वीरों की पूजा

मौखिक

क) सन्यासी के हाथों में पूजा का थाल, दीप और माला- फूल आदि चीजें हैं।

ख) सन्यासी की आंखें तीर्थराज चित्तौड़ देखने को तरस रही है।

ग) 'बैरी की बोली से' कवि का तात्पर्य है शत्रुओं के आक्रमण की आहट।

घ) सन्यासी सातियों के पैरों की धूल लेने जा रहा है।

(लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर-)

(क) आप थाल सजाकर किसे पूजने जा रहे हो? तुम राम नाम का पीतांबर अपने शरीर पर डालकर कहाँ जा रहे हो? क्या तुम अपनी मस्ती में पथ भूल गए हो?

(ख) सन्यासी सबसे बड़ा तीर्थ चित्तौड़ को मानता है, क्योंकि चित्तौड़ में देशभक्त वीर जवानों की टोली रहती है।

(ग) चित्तौड़ राज्य पर संकट आया देखते ही जवानों की टोली मरने- मारने को तैयार हो जाती है। अपनी आन के लिए माँ- बहनें अपने आप को बलिदान कर देती हैं।

(घ) वीर मंडली गर्वित स्वर से माँ की जयजयकार कर रही हैं।

(ङ) सन्यासी का गंतव्य तीर्थराज चित्तौड़ है।

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर-)

(क) सन्यासी देशभक्त है। उसे चित्तौड़ राज्य की खातिर शहीद हुए जवानों और जौहर व्रत करने वाली महिलाओं पर गर्व है इसलिए वह उनके पैरों की धूल लेने के लिए चित्तौड़ राज्य की तीर्थ यात्रा पर निकला होगा।

(ख) मध्य युग में राजपूत स्त्रियाँ अपने महल या नगर के शत्रुओं से घिर जाने पर और अपने पक्ष की हार निश्चित होने पर जलती चिता में कूद पड़ती थी, जिससे वे शत्रु द्वारा अपमानित होने से बच सके उनके इस कार्य को 'जौहार' कहा गया।

(ग) तीर्थ की पारंपरिक परिभाषा है- ऐसा स्थान जहाँ पर किसी देवता का निवास हो अथवा उसका मंदिर बना हो। परंतु कवि ने वीरों की भूमि को सबसे बड़ा तीर्थ कहाँ है।

(घ) इस कविता से हमें देश प्रेम की प्रेरणा मिलती है। हमें सभी तीर्थ और धर्मो से बढ़कर 'देश- प्रेम' को महत्व देना चाहिए। हमें चित्तौड़ वासियों की तरह ही अपने देश के लिए मरने मिटने का भाव रखना चाहिए।

(ङ) तुमने शरीर पर पीतांबर डाला हुआ है, हाथ में पूजा की थाली पकड़ी हुई है, पर तुम जिस तरफ जा रहे हो उधर न तो प्रयाग है, न गंगा सागर है, न कोई अन्य तीर्थ है। फिर तुम किधर जा रहे हो, आखिर तुम्हारी मंजिल कहाँ है?

(च) हे संन्यासी, तुम पागलों की तरह नंगे पैर किधर चल दिए ? तुम्हें अपने पैरों में चुभते काँटो की परवाह नहीं है। तुम्हें अभी बहुत दूर जाना है क्योंकि जिस तरफ तुम जा रहे हो वहाँ तो कोई राह भी नहीं है, बल्कि सब ओर जंगल ही जंगल है।

पठित गद्यांश

क) प्रस्तुत कविता वीरों की पूजा तथा कवि का नाम श्याम नारायण पांडेय है।

ख) इन पंक्तियों में सन्यासी से प्रश्न किया जा रहा है।

ग) पूजा करने वाला थाल सजाकर ले जा रहा है।

घ) उसने अपने शरीर पर राम- नाम का पीतांबर डाला हुआ है।

ङ) 'पथ'- रास्ता , मार्ग 'फूल'- कुसुम , सुमन